संवेदनशील बनाने के लिए कहानियों का उपयोग | PARI अनुभव

प्रीति डेविड

गर्मी के मौसम में जब ओडिशा में तापमान बढ़ने लगता है और चरागाहों में घास की कमी होने लगती है तो भैंस चराने वालों को अपने पशुओं के चारे के लिए दूर-दूर भटकना पड़ता है। शहर के एक प्राथमिक विद्यालय में ग्रामीण भारत के बारे में बात करने की शुरुआत हमने बच्चों को भैंसों के झुण्ड की तस्वीरें दिखाते हुए की। तस्वीर में भैंसें हरे-भरे चरागाहों तक पहुँचने के लिए नदी पार करके दूसरी ओर जा रही थीं; हमने बच्चों को बताया कि ये चरवाहे अपने पशुओं की देखभाल अच्छी तरह से करते हैं। यहाँ तक कि वे पशुओं के बच्चों को अपनी गोद में लेकर जा रहे हैं।

एक कहानी *(स्विमिंग टु माइग्रेट इन ओडिशा)* में भैंसें नदी पार जा रही होती हैं और एक बछड़ा गहरे पानी में अपनी माँ को मदद के लिए बुलाता है। इस बछड़े के साथ बच्चे तुरन्त जुड़ाव बना लेते हैं। हम इस कहानी का उपयोग यह बताने के लिए करते हैं कि भारत में डेयरी किसान अपने पशुओं की देखभाल कैसे करते हैं। हो सकता है, बच्चों ने उन पशुओं का दूध सुबह ही पिया हो। वैसे इससे बच्चों को बहुत कुछ और भी सीखने को मिलता है।

शिक्षण के एक साधन के रूप में PARI

क्या आप पशुओं के उन आश्रय-स्थलों के बारे में जानते हैं जहाँ गर्मियों में, जब भोजन और चारा मिलना मुश्किल हो जाता है, तब सभी किसान अपने पशुओं को ले जाते हैं? या महाराष्ट्र के यवतमाल के उस चरवाहे के बारे में जानते हैं, जिसने जंगलों में घूमने वाले बाघों से खुद की रक्षा करने के लिए एक कवच तैयार किया है जब वह अपने पशुओं को चराने ले जाता है? इन कहानियों से अधिगम के अन्य प्रतिफल तो मिलते ही हैं, साथ ही पशुओं के प्रति दयालुता बरतने के बारे में एक प्रभावशाली पाठ भी सीखने को मिलता है। इनसे बच्चों की कल्पनाएँ व्यापक होती हैं और उन्हें रचनात्मक रूप से सोचने का अवसर मिलता है। वे दूसरों के अनुभवों को महसूस करने, बारीकी से निरीक्षण करने, समझने और समानुभूति का भाव रखने में सक्षम हो जाते हैं।

प्राथमिक स्कूल के शिक्षक *पीपुल्स आर्काइव ऑफ़ रूरल इंडिया* (PARI) का उपयोग कर बारह भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कहानियों, तस्वीरों और फ़िल्मों को डाउनलोड कर सकते हैं। यह ऑनलाइन पत्रिका निःशुल्क है। इसमें कृषि, खेती, प्रवास, समुदाय, हस्तकलाएँ, आदिवासियों जैसे कई ग्रामीण मुद्दों पर सामग्री दी जाती है। ये कहानियाँ विद्यार्थियों (प्राथमिक से स्नातकोत्तर स्तर तक) को कई समकालीन मुद्दों के बारे में जानकारी देती हैं, संवेदनशील बनाती हैं और सिखलाती हैं। हमें लगता है कि हमारी पाठ्यपुस्तकों में ग्रामीण भारत के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं होती है जबकि वह हमारे देश का बहुत बड़ा हिस्सा है। ग्रामीण भारत के जीवन और आजीविका के अनेक तौर-तरीक़ों के बारे में विद्यार्थियों को पर्याप्त जानकारी नहीं होती है। जैसे ग्रामीण लोगों के घर, उनके नौकरी-धन्धे, वे जंगल जिन पर वे निर्भर करते हैं, वे फसलें जिन्हें वे उगाते हैं, वे हस्तकलाएँ जिन्हें वे बनाते हैं, उनके गीत और प्राचीन किंवदन्तियाँ आदि बहुत कुछ।

ग्रामीण भारत के भीतरी भागों से सम्बन्धित सच्ची कहानियों का उपयोग करना एक ऐसी दुनिया को सुनने और देखने का मौक़ा है जो कई मायनों में हमसे जुड़ी है। बतौर एजुकेटर, हम अपने बच्चों को किन चीज़ों को महत्त्व देना सिखाना चाहते हैं? क्या हम उन्हें सम्मान और समानुभूति के निर्माण के लिए साधन प्रदान कर सकते हैं? छोटी-से-छोटी उम्र के विद्यार्थियों में भी मानवता का पोषण करना महत्त्वपूर्ण है। पाठ योजनाएँ और शिक्षण मॉड्यूल आमतौर पर अकादमिक अधिगम पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि भावनात्मक और सांस्कृतिक विकास नागरिकता के सत्व को निर्धारित करने में एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। इसलिए जब बच्चे उन चरवाहों की कहानी सुनते हैं जो अपने पशुओं को अपने बच्चों जैसा मानते हैं तो उनके लिए दूध एक ऐसी वस्तु नहीं रह जाती जिसे एक-जैसे पैकेटों में बेचा जाता है। बल्कि वह उनके लिए एक ऐसी चीज़ बन जाती है जो किसी व्यक्ति का जीवन है, उसकी आजीविका है। इस तरह हम यह समझ पाते हैं कि दूध को हमारी खाने की मेज़ तक लाने के लिए क्या-कुछ करना पड़ता है।

PARI संसाधनों का उपयोग करना

कोई एक विषय ऐसा नहीं है जो विद्यार्थियों को समानुभूति और करुणा सिखाता हो। नैतिक शिक्षा या मूल्य शिक्षा की

कक्षा में वही पुरानी कहानियाँ दोहराई जाती हैं जिनमें थोपी हुई सीखें होती हैं। बच्चों से अपेक्षा की जाती है कि वे 'ज़रूरत के वक्त काम आने वाला मित्र ही सच्चा मित्र है' जैसी घिसी-पिटी उक्तियाँ याद करें। देश के अल्पज्ञात समुदायों और व्यवसायों के बारे में बच्चों को पढ़ाना हमारे विशाल देश और हमारे आर्थिक व सामाजिक ताने-बाने के जटिल परस्पर सम्बन्धों को समझाने का एक तरीक़ा हो सकता है। साथ ही, बच्चों में समानुभूति की भावना को बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि वे दूसरों के बारे में सीखें।

हम स्कूलों को ऐसे प्रोजेक्ट डिज़ाइन करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं जो अनुभव से सीखने को बढ़ावा देते हों; जिसमें बच्चे बाहर जाकर उन लोगों के रोज़मर्रा के जीवन से प्रत्यक्ष रूप से सीखें जिनके साथ हम आम तौर पर नहीं जुड़ते।

जैव विविधता पर प्रोजेक्ट

अधिकांश बच्चे शहद से परिचित हैं और इसके स्वाद और मिठास का आनन्द लेते हैं। उन्होंने मधुमक्खियों को भी देखा है और वे जानते हैं कि उनसे दूर रहना चाहिए। PARI की कहानियाँ, जिनमें फ़ोटो और वीडियो होते हैं, उनका उपयोग करके शिक्षक बच्चों को शहद निकालने की प्रक्रिया के साथ-साथ जैव विविधता को बनाए रखने में मधुमक्खियों जैसे कीटों के महत्त्व के बारे में समझा सकते हैं। इसके साथ ही, बच्चे पारम्परिक रूप से शहद इकट्ठा करने वालों और इस काम को करने के लिए आवश्यक विशिष्ट कौशल को समझेंगे और उनका सम्मान करना शुरू कर देंगे।

शहद की कहानी पर हमारी परियोजना में सुन्दरबन के शहद इकट्ठा करने वाले बताते हैं कि वे कैसे बाघ, मगरमच्छ और यहाँ तक कि डाकुओं से बचते हुए शहद खोजते हैं। वे बताते हैं कि कैसे वे धुआँ करके मधुमक्खियों को भगाते हैं, शहद के शिकारियों की सुरक्षा के लिए क्या इन्तज़ाम होते हैं, या नहीं होते हैं और शहद को एक जगह से दूसरी जगह कैसे ले जाया जाता है आदि। इसके बाद *चेसिंग बीज़ फ़्रॉम सुन्दरबंस टु छत्तीसगढ़* की फ़ोटो-कथा दिखाई जा सकती है जिसमें हम शहद निकालने की प्रक्रिया देखते हैं। शहद निकालने के इस कौशल की वजह से उन्हें अन्य राज्यों में भी आमंत्रित किया जाता है। या फिर, *द हनी हंटर्स ऑफ़ द हिल्स* कहानी सुनाई जा सकती है जिसमें पेड़ के कोटरों के छत्तों में से शहद निकालने की नीलगिरी के टोडा आदिवासियों की अनूठी तकनीक का वर्णन किया गया है। उन्हें एक छोटा वीडियो *बैटल ऑफ़ द बग्स : ऑन विंग्स ऑफ़ क्लाइमेट चेंज* दिखाया जा सकता है जिसमें परागण की प्रक्रिया और हमारे जंगलों के स्वास्थ्य में मधुमक्खियों के महत्त्वपूर्ण योगदान को समझाया गया है।

इस तरह, शहद और मधुमक्खियों पर इन छोटी-छोटी जानकारियों से गुज़रते हुए हमारा परिचय प्राणीविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान व जीवविज्ञान (कीट, पेड़, परागण, पराग और फ़्रक्टोज़) और भूगोल (डेल्टा, जंगल और पहाड़ियाँ) के कुछ हिस्सों से होता है। हम जैव विविधता और प्रजातियों की एक-दूसरे पर निर्भरता को भी समझ पाते हैं। और साथ-ही-साथ, हम नए-नए शब्द व अवधारणाएँ भी सीखते हैं। इसके अलावा, और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हम शहद के इतिहास, उसे निकालने की प्रक्रिया और मधुमक्खियों के अपने जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान के बारे में भी जान पाते हैं। हम अलग-अलग समुदायों के जीवन के बारे में भी सीखते हैं और यह भी कि वे कीट जगत से कैसे जुड़े हैं।

कीटों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए शिक्षक स्कूल में ही एक छोटा प्रोजेक्ट करवा सकते हैं। विद्यार्थियों के एक समूह को एक पेड़ या झाड़ी सौंपकर उन्हें एक घण्टे का समय दिया जा सकता है। इस दौरान उनको पेड़ अथवा झाड़ी पर या उसके आसपास मौजूद कीट-जीवन को नोट करना होगा या चित्र बनाना होगा। इसके बाद शिक्षक इन जीवों के एक-दूसरे से सम्बन्ध, उस पौधे की सेहत से इनके सम्बन्ध और इससे आगे जाते हुए समूची धरती की सेहत से उनके सम्बन्ध के बारे में समझा सकते हैं।

जेंडर पर प्रोजेक्ट

युवा विद्यार्थियों के साथ महिला किसानों पर किए जाने वाले सत्र हमारे लिए सबसे सन्तोषप्रद हुआ करते हैं। 'लैंगिक समानता' शब्द का प्रयोग किए बिना ही इसके शिक्षण के लिए ये सबसे उपयुक्त हैं।

इसकी शुरुआत तमिलनाडु की एक किसान और एकल अभिभावक चन्द्रा की कहानी से होती है, जो मुँह अँधेरे फूलों की कटाई और तुड़ाई करती है ताकि सुबह-सुबह बाज़ार पहुँच सके। वह खेत और घर में बहुत सारे काम करती है और पाठक समझ जाते हैं कि कहानी का शीर्षक *स्मॉल फ़ार्मर, बिग हार्ट, मिरेकल बाइक!* क्यों है! इसके बाद हम *फ़ुटप्रिंट्स इन द सैंड्स ऑफ़ ए माइन* शीर्षक कहानी लेते हैं, जो उत्तर प्रदेश के बांदा ज़िले की महिला किसानों के एक समूह की शक्तिशाली छवि प्रस्तुत करती है। इस कहानी से विद्यार्थी यह समझ पाते हैं कि बाँध से अवरुद्ध नदी की तुलना में बहने वाली नदी उन महिलाओं के लिए कितनी महत्त्वपूर्ण है जो खेती का ज़्यादातर काम करती हैं। अन्त में, वे ओडिशा के पत्रपुट में रहने वाली देशी बीजों का संरक्षण करने वाली कमला पुजारी से मिलती हैं। इस क्षेत्र की जैव विविधता को बनाए रखने में मदद करने के लिए उनको पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया गया है।

विद्यार्थियों को घर पर करने के लिए एक प्रोजेक्ट दिया गया। उनसे कहा गया कि वे उन सभी कामों की सूची बनाएँ जिन्हें उनकी माँ/दादी सुबह से रात तक करती हैं। इसमें खाना खाने, नहाने के निर्देश देने आदि जैसे काम भी शामिल किए जाएँ! इसे लेकर पहले तो कक्षा में बच्चे बहुत हँसे, लेकिन जब उन्होंने इन महिलाओं के काम, जैसे घर पर उपयोग के लिए पानी भरना आदि, और उसमें लगने वाले समय को नोट किया तो उन्हें इन कार्यों का महत्त्व समझ में आया। इन कहानियों की पृष्ठभूमि में वे यह देख पाए कि महिलाओं का योगदान कितना अधिक है और खाद्यान्न उगाने और पारिस्थितिक तंत्र को बनाए रखने में उनकी भूमिका कितनी महत्त्वपूर्ण है।

प्रवास पर प्रोजेक्ट

इस प्रोजेक्ट के बारे में बताने के लिए हम पहले प्रवास शब्द की व्याख्या करते हैं और बच्चों को PARI की कहानियों से विभिन्न प्रकार के प्रवास की तस्वीरें दिखाते हैं – मौसमी प्रवास, पुनरावर्ती (circular) प्रवास, स्थायी प्रवास आदि। फिर हम उन्हें अपने आसपास के प्रवासी लोगों के साथ बात करने के लिए कहते हैं, जैसे रसोइया, ड्राइवर, गार्ड आदि। शुरुआत में विद्यार्थियों को लगता है कि बातचीत शुरू करना अटपटा होगा, लेकिन हम ज़ोर देते हैं कि वे निम्नलिखित पाँच प्रश्न पूछकर बातचीत करने की कोशिश करें :

1. वे किस गाँव, ज़िले और राज्य से आए हैं?
2. उन्होंने कैसे यात्रा की थी?
3. क्या उन्होंने स्कूल में पढ़ाई की है?
4. वे दूसरी जगह क्यों आए?
5. वे किस चीज़ की कमी सबसे ज़्यादा महसूस करते हैं?

जब विद्यार्थी एक सप्ताह बाद अपने आसपास के लोगों से, जो अपेक्षा के अनुरूप प्रवासी ही थे, बातचीत करके लौटे तो उन्होंने प्रवासियों के बारे में बहुत कुछ सीख लिया था। साथ ही, अब वे प्रवासियों की उन रूढ़िवादी छवियों को भी नहीं मान रहे थे जिनमें उन्हें बेघर, आलसी और अनपढ़ दिखाया जाता है।

ऐसे लोगों से बात करना जो अन्यथा उनके लिए ‘अदृश्य’ थे, बच्चों को कई प्रश्नों से जूझने और उनको समझने के लिए मजबूर करता है। मिसाल के लिए, लोगों को अपने घरों और प्रियजनों को क्यों छोड़ना पड़ता है, भारत में वे कौन-कौन-से स्थान हैं जहाँ से लोग पलायन करते हैं, क्या वे वापस जा पाते हैं, उन्हें स्कूल छोड़ना कैसा लगता है, कम उम्र में ही काम करना शुरू करने के क्या मायने हैं, उन्होंने अपना गाँव या शहर क्यों छोड़ा आदि। ये बच्चे जिन लोगों को उनकी नौकरी से सम्बन्धित नामों जैसे ‘गार्ड’, ‘धोबी’ या सामान्य सम्बोधनों, जैसे, ‘दीदी’ या ‘भईया’ से बुलाते थे, अब उनकी एक पहचान बनी। बच्चों ने कर्ज़, बाल-मज़दूरी, भूख और घर व परिवार से दूर बिताए बरसों का दर्द, अपने बच्चों को बड़ा होता हुआ न देख पाना या अपने माता-पिता की देखभाल न कर पाने की टीस जैसी बातों को समझा और महसूस किया।

बच्चों द्वारा की गई कुछ टिप्पणियाँ :

- मैंने सीखा कि ‘सूखा’ शब्द का क्या अर्थ है।
- आपको पता है, उस ड्राइवर की ज़िन्दगी मेरे जैसी ही थी, लेकिन पिता की मृत्यु के बाद उन्हें स्कूल छोड़कर नौकरी करनी पड़ी।
- हमारी उम्र के बच्चे स्कूल जाने की बजाय खेतों और भवन निर्माण स्थलों पर काम कर रहे हैं।
- किसान हमारे खाने-पीने की चीज़ें उगाते हैं हालाँकि, कभी-कभी खुद उन्हें ही खाने को नहीं मिलता।

खेती और भोजन पर प्रोजेक्ट

खेती-किसानी और भोजन पर किया गया प्रोजेक्ट यह सिखाता है कि बच्चों की थाली में भोजन कैसे आता है और किन प्रक्रियाओं की बदौलत उनके चॉकलेट में चीनी पहुँचती है!

हम बच्चों को खेती पर कुछ कहानियाँ दिखाते हैं – चावल और चीनी की खेती, तरबूज़ और टमाटर की खेती।

फिर हम उनसे कहते हैं कि वे अपने घर के किसी बड़े व्यक्ति के साथ सब्ज़ी मण्डी जाएँ और किसी सब्ज़ी बेचने वाले से बातचीत कर निम्नलिखित प्रश्न पूछें :

1. आप कहाँ से आए हैं?
2. क्या आप खुद इन सब्ज़ियों को उगाते हैं? या आप उन्हें कहाँ से खरीदते हैं?
3. आप सब्ज़ियों को बाज़ार तक कैसे लाते हैं और उन सब्ज़ियों का क्या होता है जो नहीं बिकतीं?

कभी-कभी बच्चों को अपने जवाब पाने के लिए इन्तज़ार करना पड़ता है क्योंकि सब्ज़ी बेचने वाले अपने ग्राहकों को सब्ज़ी बेचने में व्यस्त होते हैं। इससे बच्चों को उन्हें काम करते हुए देखने का मौक़ा मिलता है।

बच्चों द्वारा की गई कुछ टिप्पणियाँ :

- मैंने पहले कभी तराज़ू नहीं उठाया; यह तो काफी भारी है!

- उस महिला (सब्ज़ी-विक्रेता) ने कहा कि उसे यहाँ सब्ज़ी बेचने आने के लिए बस में दो घण्टे की यात्रा करनी पड़ती है।

संक्षेप में, PARI की शिक्षण विधि में बच्चों को लोगों की रोज़मर्रा की ज़िन्दगी की जानकारी देकर उसके प्रति संवेदनशील बनाने के लिए विभिन्न प्रकार से कहानियों का उपयोग किया जाता है – चाहे वह लिखित कहानी हो, तस्वीरें हों या फ़िल्में। इससे उन्हें नागरिकता की व्यापक समझ हासिल करने में मदद मिलती है। भाषाओं, आजीविकाओं, समुदायों और संस्कृतियों की विविधता के बारे में सीखने से बच्चों को रूढ़िबद्ध छवियों को नकारने और अपने साथी नागरिकों की भिन्नताओं के प्रति सहिष्णु बनने में मदद मिलती है।



प्रीति डेविड *पीपुल्स आर्काइव ऑफ़ रूरल इंडिया* (PARI) के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, महिलाओं, हस्तकलाओं और आजीविका के बारे में लिखती हैं। PARI शिक्षा के सम्पादक के रूप में कक्षाओं और पाठ्यचर्या में ग्रामीण मुद्दों को लाने के लिए स्कूलों और कॉलेजों के साथ काम करती हैं। बीएड डिग्री के साथ वे अर्थशास्त्र ऑनर्स स्नातक हैं। उन्होंने *द इकोनॉमिक टाइम्स* और *सीएनबीसी, एबीएनआई (टी.वी.)* के साथ काम किया है और *इंडिया बिज़नेस रिपोर्ट (बीबीसी वर्ल्ड)* के लिए रिपोर्टिंग की है। वे भारतीय शिल्प परिषद के प्रकाशन *'स्टोन क्राफ़्ट्स ऑफ़ इंडिया'* की सम्पादक रही हैं। प्रीति ने आन्ध्र प्रदेश के ऋषि वैली स्कूल और सेंट जोसेफ़ बॉयज़ हाई स्कूल, बेंगलूरु में पढ़ाया है। वे विश्वविद्यालयों में विकास पत्रकारिता में गेस्ट फैक्ल्टी हैं और *'कमिंग होम' (करडी टेल्स)* की लेखिका हैं। उनसे priti@ruralindiaonline.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल